RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

उदय शंकर भट्ट के गीति नाट्यों में नारी चित्रण

चौहान हर्षदभाई जे

पीएच.डी शोध छात्र, भाषा साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद-380009 गुजरात (भारत)

[Corresponding Author:chauhanh192@gmail.com]

भारतीय साहित्य में नारी के विविध रूप देखने को मिलते हैं। नारी के कुछ रूप सम्मान की, कुछ प्रेम की, कुछ दया की और कुछ घृणा आदि रूपों को साहित्य में ग्रहण किया गया हैं। संस्कृत साहित्य में नारी को देवी और दानवी रूप में देखा गया। नारी के माता, पुत्री, प्रेमिका, भगिनी आदर्श पत्नी आदि सभी रूप भी देखने को मिलते हैं। हिन्दी साहित्य में भी नारी के इन रूपों का स्वीकार किया गया हैं।

भट्ट जी के गीतिनाट्यों में भी नारी चित्रण दिखाई देता हैं।उनके नारी पात्र विशेषकर रामायण, महाभारत और पुराण पर आधारित हैं। भट्ट जी के गीतिनाट्यों में नारी चित्रण संबंधी प्रमुख गीतिनाट्य हैं- मत्स्यगंधा, राधा, अशोकवन बन्दिनी और विश्वामित्र। इन गीतिनाट्यों के प्रमुख नारी पात्र हैं- मत्स्यगंधा, राधा, सीता, मेनका,उर्वशी आदि हैं।

'मत्स्यगंधा'गीतिनाट्यकी प्रमुख पात्र मत्स्यगंधा(सत्यवती) हैं।'मत्स्यगंधा' केवट की कन्या हैं। यहाँ मत्स्यगंधा की विशेषता और अदम्य लालसा का संघर्ष दिखाया हैं। नाव में पराशर कामान्ध होकर मत्स्यगंधा के सामने रतिप्रस्ताव करते हैं। सामाजिक नैतिकता बोध और प्रवाद भीति से भयभीत होकर वह इस प्रकार कहती हैं-

"यह तो अनय प्रभो, कैसे मान लूँ मैं यह,
हीन जाति तो भी हैं समाज का अनन्त भय।"(1)

पराशर की पाप-पुन्य, कर्म-अकर्म, उँच-नीच सम्बन्धी बात सुनकर और अक्षय यौवन से वह पुर्ण तृप्त हो जाती हैं।मत्स्यगंधा का सुंदर रूप वरदान के साथ साथ अभिशाप भी हैं। आधुनिक युग में भी नारी सौंदर्य वरदान के साथ साथ अभिशाप भी बन जाता हैं। इसी कारण प्रायः नारी शोषण होता हैं।कामान्ध पराशर नारी को वश में लाने के लिए समर्थ पुरूष के रूप में वे हमारे सम्मुख आते हैं। नारी का ह्रदय कोमल और चंचल हैं। अतः नारी का ह्रदय जल्द ही आत्मसमर्पण के लिए तैयार हो जाता हैं। समाज में नारी की शोचनीय स्थिति यहाँ चित्रित हैं।

'विश्वामित्र' में चित्रित नर-नारी संघर्ष संसार में अनादिकाल से चल रहा हैं। मेनका शक्ति स्वरूपिणी नारी का प्रतिरूप हैं। वह पुरूष की दुर्बलताओं को अच्छी तरह जानती हैं। वह विश्वामित्र को वश में करके दिखाना चाहती हैं कि वह कौन है। पुरूष के अहं को चकनाचूर करनेवाली नारी का प्रतिक हैं मेनका। मेनका को देखकर विश्वामित्र उसे पाने के लिए तैयार हो जाते हैं। तब मेनका उनको बचा लेती हैं। यहाँ पुरूष पर नारी की विजय होती हैं। विश्वामित्र ओर मेनका के संयोग से ही पुत्री शकुंतला का जन्म होता हैं।

'उर्वशी' को मानव के प्रति घृणा हैं।उर्वशी पुरूष को अपना प्रतिद्वंदी मानती हैं। उर्वशी का स्वर आधुनिक नारी का तीव्र स्वर हैं। पुरूष द्वारा शासित रहने की ईच्छा आधुनिक स्त्री को नही। मेनका नारी को शक्तिस्वरुपिणी मानती हैं, तो उर्वशी इनकार करते हुए कहती हैं-

"नारी प्राण विहीन चेतना
से रहित एक भावना पुंज पराई आस हैं।"(2)

नारी का जीवन दूसरों को सुख प्रदान करने के लिए हैं। वह स्वयं सुखहीना हैं। वह पुरूष के प्राणों की मदिरा हैं। नारी की जिंदगी दूसरों के लिए अर्पित हैं। विश्वामित्र जब कहते हैं कि सब पर नर का शासन चल रहा हैं, तब उर्वशी पूछती हैं कि- नर-नारी दोनों की सृष्टि ईश्वर ने की हैं। नर ब़डा, नारी छोटी यह कैसे हो सकता हैं। नर-नारी समत्व की समस्या आज भी हैं। आज भी समान अधिकार के लिए संघर्ष चल रहा हैं।

'राधा' इसमें अपने परंपरागत स्वकिय रुप से भिन्न परकीया हैं। राधा के मन में कृष्ण के प्रति समर्पण युक्त प्रेमभावना हैं। उदात्त गुणों से युक्त सात्त्विक नारीत्व रखनेवाली इस तरह की अनेक नारीयाँ वर्तमान समय में हैं। वह किसी का बन्धन नहीं चाहती हैं। चाहे पति हो या परिवार। राधा कहती हैं-

"यहीं बस, मैं लाज तज मर्यादा बन्धन तोड
त्याग सब कुछ, बन वियोगिनी मुक्त जीवन जी सकूँ री।
न कोई मेरा पति- न मैं किसी की नारी
मुझे किसी का बन्धन प्रिय नही।।"(3)

राधा केद्वारा नारी के स्वतंत्रता बोध का परिचय प्राप्त होता हैं। राधा केद्वारा वर्तमान युग की नारी मुक्ति की समस्या

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उभर आती हैं। नारी अनादिकाल से ही मुक्ति चाहती हैं। वर्तमान युग में भी नारी मुक्ति एक प्रश्नचिह्न बन गयी हैं।

'अशोकबन्दिनी' में सीता नीड़र और वाक्पटु हैं। सीता का शक्तिस्वरूपिणी और साहसी रूप उभर आता हैं। सीता की वाक्पटुता और दृढ़ता के सम्मुख राक्षसियाँ सिर नवाती हैं। सीता का मानना हैं कि वियोगरस में प्रेम अत्यधिक तीव्र और चमकदार होता हैं। वह रावण के अहं को चकनाचूर कर कहती हैं-

"पीटता जो ढ़ोल अपनी किर्ती का,
और बल पुरूषार्थ का, मद-गर्व का,
शून्य हैं वह, सत्य ही उससे रहित,
बोलता वह पात्र जिसमें अल्प जल।"(4)

यहाँ सीता अबला नारी के रूप में अवतरित नहीं हैं। सबला और साहसी नारी के रूप में अवतरित हुई हैं। सीता की पतिभक्ति असीम हैं। राम के बीना इस संसार को ही वह शून्य समझती हैं।

मंदोदरी सद्नारी का प्रतिक हैं, जो सबकी भलाई मात्र चाहती हैं। अपने पति को अन्याय करने से वह रोकती हैं। अपने पति को सद्पथ की ओर ले जानेवाली ममतामयी और कर्तव्यनिष्ठ नारी का प्रतिरूप हैं मंदोदरी। पुरूष अहं को अपने प्यार में नष्टभ्रष्टकरनेवाली हैं नारी।

इन नारी पात्रों के माध्यम से नर-नारी संघर्ष, प्रेम समस्या, नारी मुक्ति, पति-पत्नी सम्बन्ध, नारी की शक्ति आदि का प्रतिपादन किया गया हैं। भट्ट जी के नारी पात्र अपने आप में सशक्त हैं। वह विभिन्न परिस्थितियों का ड़टकर सामना करते हैं।

संदर्भः

1. उदय शंकर भट्ट(1960), विश्वामित्र और दो भावनाट्य, 'मत्स्यगंधा' आत्माराम एण्ड संस,दिल्लीः59
2. वहीं, पृष्ठ संख्याः10
3. वहीं,पृष्ठः90
4. उदयशंकर भट्ट(1959), 'अशोकबन बन्दिनी तथा अन्य गीतिनाट्य', भारतीय साहित्य मंदिर,दिल्लीः13